

आदिवासी महिला किसानों को मषरूम उत्पादन

तकनीक पर प्रषिक्षण

आदिवासी किसानों को समाज समाज की मुख्य धारा से जोड़ने और स्वरोजगार को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय जैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान, बरौंडा, रायपुर व कृषि विज्ञान केन्द्र, महासमुंद के सहयोग से दिनांक 14 मार्च से 16 मार्च को मषरूम उत्पादन तकनीक पर प्रषिक्षण का आयोजन किया गया, जिसमें बसना, जिला महासमुंद के पंद्रह आदिवासी महिला किसानों ने मषरूम उत्पादन की विधि का मंत्र सीखा जिससे उनके जीवकोपार्जन के लिए आमदनी बढ़ सकें। मषरूम उत्पादन तकनीक प्रषिक्षण के सूत्रधार आईसीएआर – राष्ट्रीय जैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान, बरौंडा, रायपुर के निदेशक एवं कुलपति डॉ. पी. के. घोष थे। डॉ. सुषील कुमार शर्मा समन्वयक एवं डॉ. ममता चौधरी नोडल अधिकारी, द्वारा जनजातीय उप-योजना का संचालित किया जा रहा है। डॉ. हूमायु खान, डॉ.एस.के.वर्मा एवं अन्य विशेषज्ञों द्वारा मषरूम के उत्पादन की विस्तृत जानकारी प्रदान की गयी एवं उसमें पाये जाने वाले पोषक तत्वों व उनके औषधीय गुणों के बारे में भी बताया गया। महिला किसानों ने अपने हाथों से मषरूम उत्पादन तकनीक सीखा। डॉ. ममता चौधरी द्वारा मषरूम के परिरक्षण एवं मषरूम उत्पादन द्वारा महिला सषक्तिकरण पर जानकारी दी गयी। डॉ. घोष ने बताया कि आदिवासी किसानों के लिए केन्द्रीय शासन फंड प्रदान करती है जिसके अंतर्गत संस्थान आईसीएआर – राष्ट्रीय जैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान, बरौंडा, रायपुर हितग्राही किसानों और उनके परिवार के जीवकोपार्जन के लिए कृषि से संबंधित लघु व्यवसाय स्थापित करने में सहायता कर रहा है। मषरूम उत्पादन द्वारा आदिवासी महिला किसानों को स्वालंबित बनाया जा सकता है। इसी उद्देश्य से भारत सरकार की जनजातीय उपयोजना के तहत संस्थान द्वारा स्वरोजगार संबंधित प्रषिक्षण एवं एक वर्ष का मषरूम उत्पादन सामग्री वितरण किया गया। जिससे पूंजीहीन गरीब किसान अपना रोजगार स्थापित कर सकते हैं एवं अपनी जीविका सुचारू रूप से चला सकते हैं। संस्थान इस पहल से आदिवासी किसानों की उन्नति व विकास के लिए प्रोत्साहित कर रहा है जो कि उन्हें आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसित करेगा।



